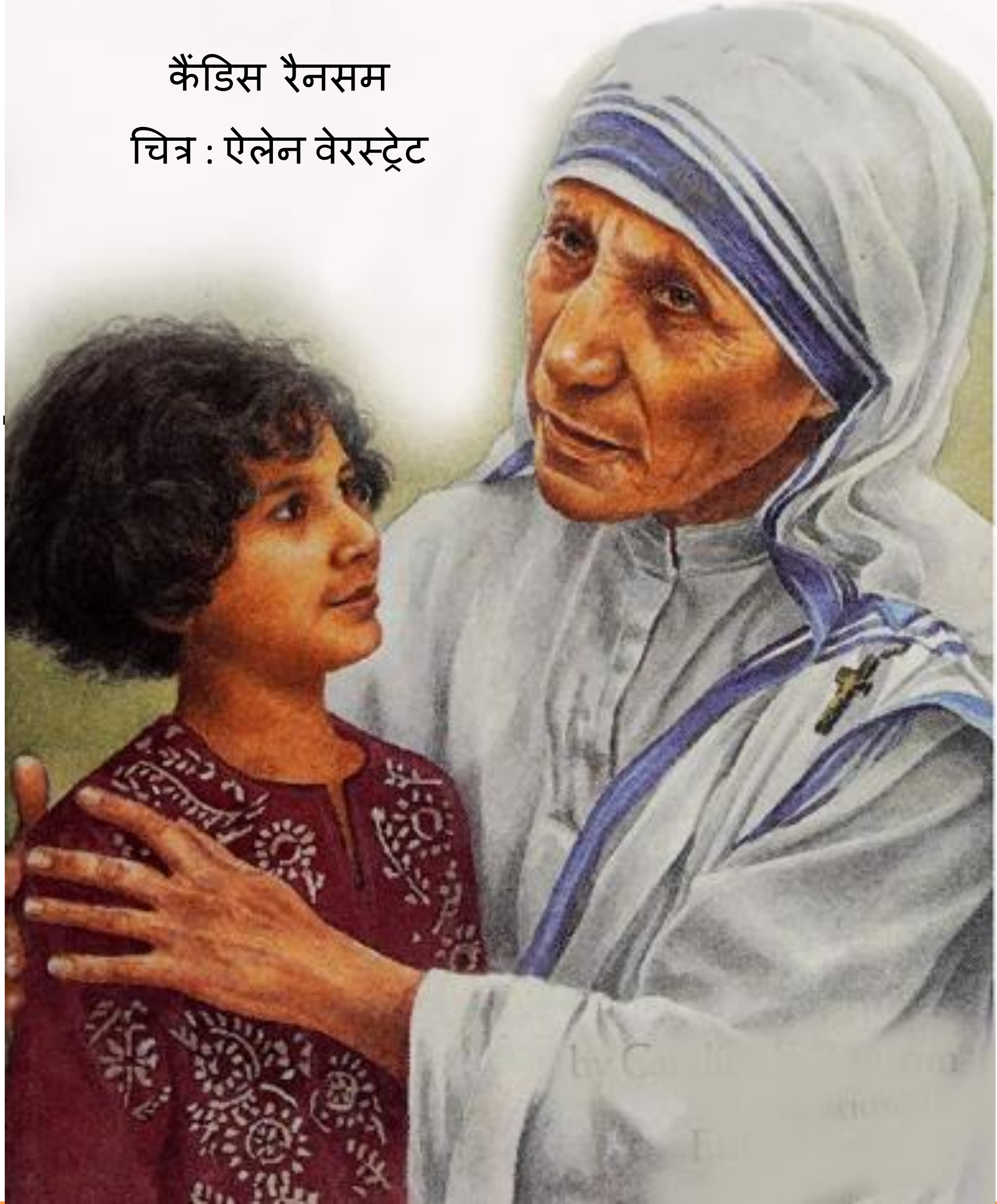
मदर टेरेसा

कैंडिस रैनसम

चित्र : ऐलेन वेरस्ट्रेट



मदर टेरेसा





स्कोप्जे, अल्बानिया 1919

जब मदर टेरेसा एक लड़की थीं, तब उनका नाम एग्नेस बोजाक्सीहु था. एग्नेस को बाजार का दिन पसंद था. वो बाजार में अपनी मां, ड्राना के पीछे-पीछे चलती थीं.



बाजार में फल-सब्जियों से ऊँचे ढेर लगे होते थे. पत्थरों की सड़कों पर मिट्टी के बर्तन बिछे होते थे. एग्नेस ने अपनी माँ को खरीदारी करते हुए देखा. ड्राना कभी एक पैसा भी बर्बाद नहीं करती थीं.

यह वर्ष कठिन था. एग्नेस के पिता की मृत्यु हो गई थी. नौ वर्षीय एग्नेस को अपने पिता की बहुत याद आई. पिता उसे "फूल-कली" के नाम से बुलाते थे. उसकी बहन ऐज, और भाई लज़ार को भी पिताजी की बहुत याद आती थी.

एग्नेस के पिता एक धनी व्यापारी थे.

पिता के बिना, बोजाक्सीहु परिवार गरीब बन गया.

फिर माँ ड्राना ने, एक दुकान खोली.

वो कपड़ों पर कढ़ाई करती थीं और उन्हें बेंचती थीं.

वो त्योहारों के विशेष कपड़े और शादी की पोशाक भी सिलती थीं.



घर के दरवाजे पर दस्तक हुई. एक गरीब महिला बाहर खड़ी थी.

ड्राना ने महिला को उनके साथ रात का खाना खाने के लिए अंदर बुलाया.

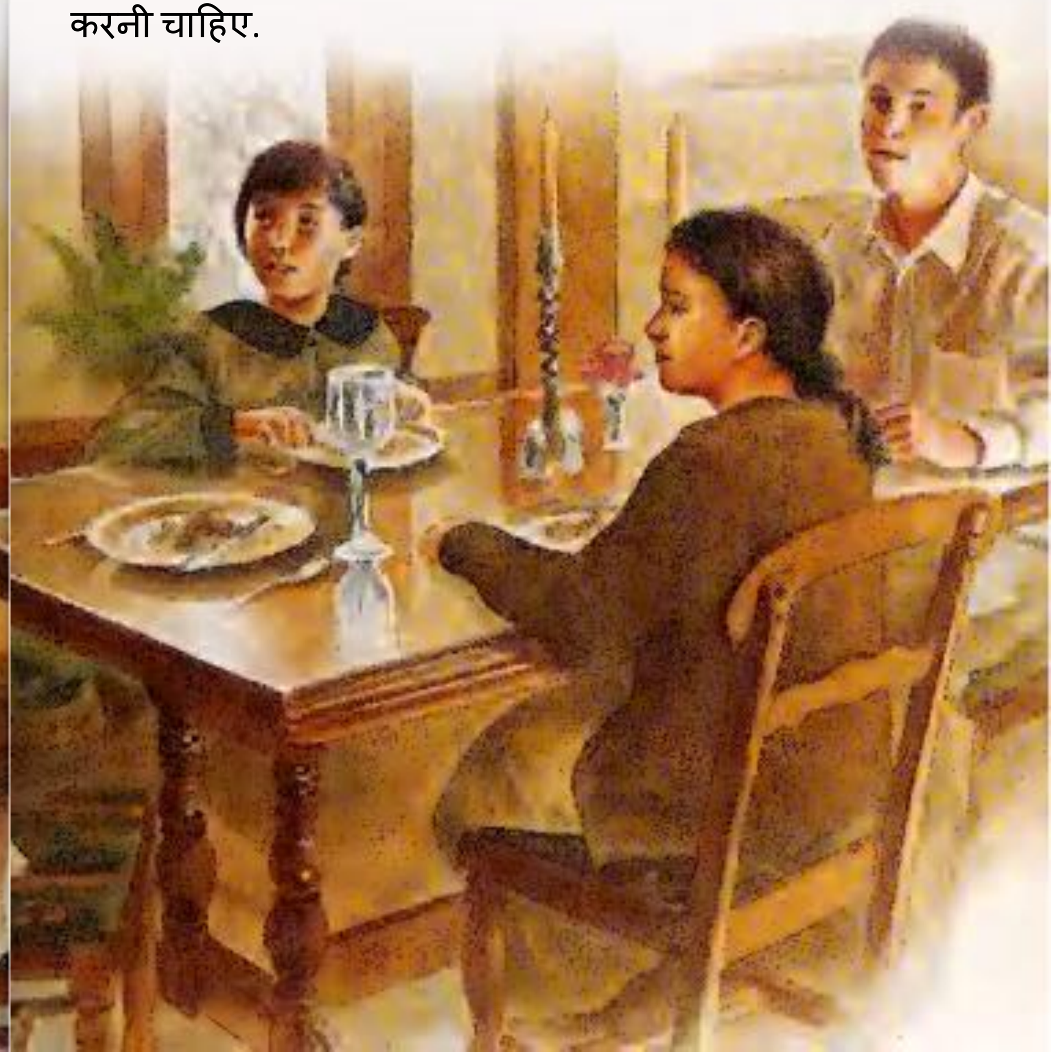


फिर उस महिला ने एग्नेस, ऐज, लजार, और माँ के साथ मेज़ पर बैठकर खाना खाया.

एग्नेस को लगा कि वो महिला कोई रिश्तेदार होगी.

लेकिन वो महिला एक अजनबी थी.

ड्राना ने एग्नेस से कहा कि भूखे अजनबियों की हमेशा मदद करनी चाहिए.



जब एक पड़ोसी महिला बीमार हुई, तो एग्नेस और उसकी माँ ने उस महिला की देखभाल की.

उन्होंने दिन में दो बार उसे नहलाया और खाना खिलाया.

उन्होंने एक विधवा जिसके छह बच्चे थे की भी मदद की.

जब ड्राना को काम करना होता था, तब एग्नेस खुद अकेले चली जाती थी.

अपनी माँ की तरह ही एग्नेस भी दूसरों की मदद करने में विश्वास रखती थी.





स्कोप्जे, अल्बानिया 1922

बारह वर्षीय एग्नेस ने खुशी से झूमकर गाया.

वह चर्च के संगीत समूह में गाना पसंद करती थी. इसको लेकर लज़ार उसे चिढ़ाता था.

अब एग्नेस घर की तुलना में सेक्रेड हार्ट चर्च में अधिक समय बिताती थी.



एग्नेस सेक्रेड हार्ट स्कूल में पढ़ने गई. लज़ार और ऐज भी वहीँ पढ़ते थे. एग्नेस एक शांत छात्र थी. एग्नेस को अपनी माँ के साथ चर्च में काम करना पसंद था.

वो त्योहारों के लिए फूल लाती थीं. वो हरेक पर्व के लिए बैनर और झंडे लटकाती थीं.

एग्नेस खुश रहती थी, लेकिन उसकी तबियत हमेशा ठीक नहीं रहती थी.

उसे अक्सर खांसी और बुखार होता था.

नम सर्दियाँ उसके स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं थीं.

इसलिए गर्मियों में उनका परिवार पहाड़ों पर चला जाता था.

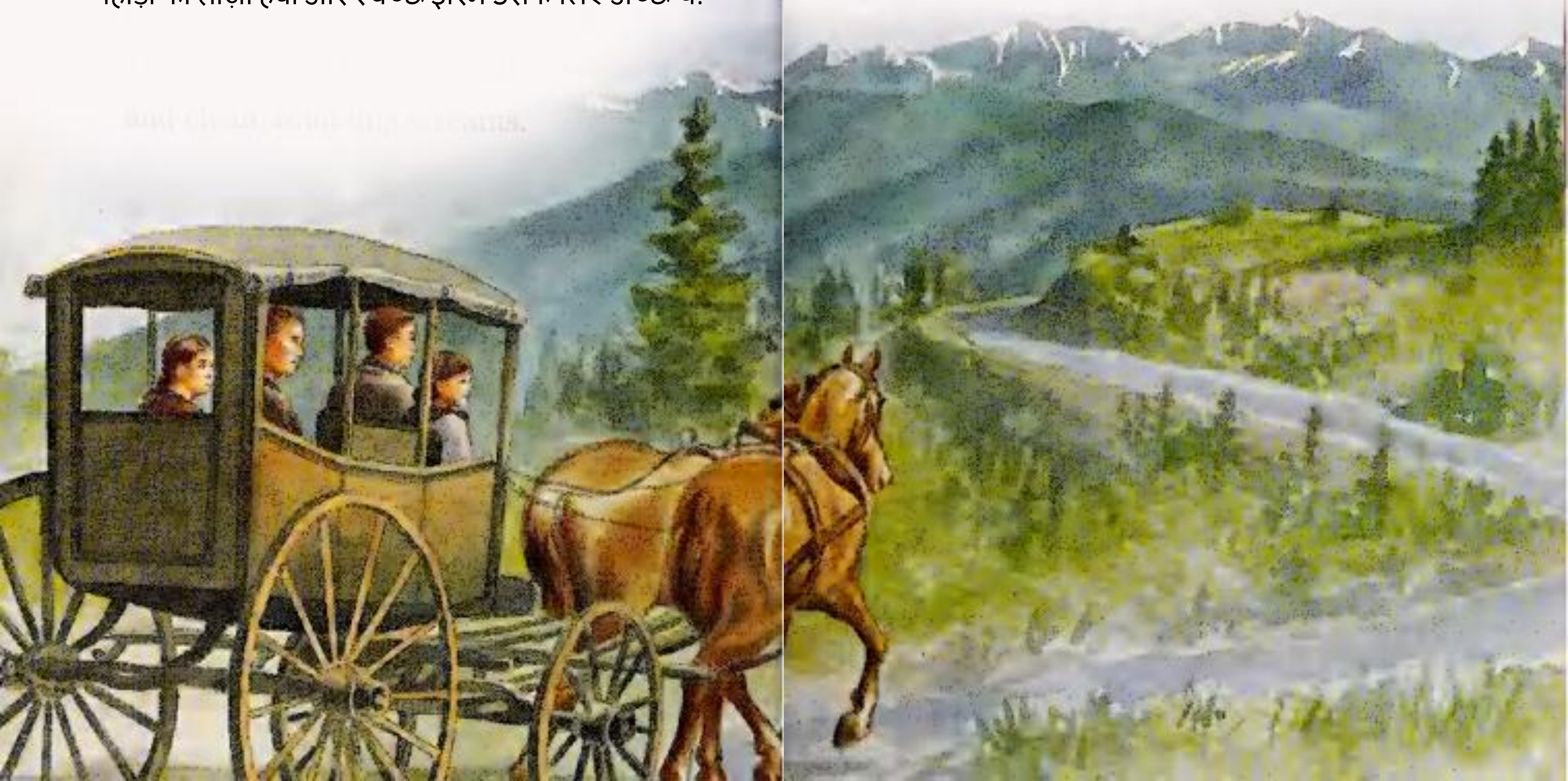
पहाड़ों की ताज़ी हवा और स्वच्छ झरने उसके लिए अच्छे थे.

पहाड़ों में, एग्नेस लोरेटो के मैडोना के चर्च में प्रार्थना करती थी.

वहां पर वो और ऐज मिलकर लंबी सैर करती थीं.

रात में, वे अलाव के आसपास बैठकर कहानियां सुनते थे.

इन यात्राओं में एग्नेस सबसे ज्यादा खुश रहती थी.



जब गर्मियों में एग्नेस 12 साल की हुई, तब कुछ हुआ.

एग्नेस, मडोना की मूर्ति के पास गई.

उसने मोमबत्ती जलाई और प्रार्थना की.

जब वो प्रार्थना कर रही थी तो उसे एक आवाज सुनाई दी.

आवाज ने उससे भगवान का अनुसरण करने और दूसरों की सेवा करने के लिए कहा.

भगवान ने खुद उससे बात की!

फिर एग्नेस को अपने जीवन के साथ क्या करना चाहिए उसे यह समझ में आया.

वो गरीबों की मदद करेगी.

वो अपना जीवन चर्च को समर्पित करेगी और एक नन बनेगी.





कलकत्ता, भारत 1931

सिस्टर टेरेसा अपनी कक्षा के सामने खड़ी थीं.

उनका नाम अब एग्नेस नहीं था.

सालों तक उन्होंने नन बनने की ट्रेनिंग ली थी.

उस वसंत में, उन्होंने अपनी पहली प्रतिज्ञा ली थी.

उन्होंने बहुत कुछ त्याग करने का वादा किया था.

उसे कॉन्वेंट की दीवारों के अंदर रहकर काम करना चाहिए.

वो बहुत से काम नहीं कर सकती थी. वो शादी नहीं कर सकती थी.

जब एग्नेस नन बनीं, तो उन्होंने एक नया नाम लिया.

उन्होंने खुद के लिए संट टेरेसा का नाम चुना

उस दिन से वे सिस्टर टेरेसा बन गईं.

सिस्टर टेरेसा, लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ाकर काफी खुश थीं.

उन्होंने खिड़की से बाहर चौड़े हरे लॉन में झांककर देखा.

वहाँ सब कुछ शांतिपूर्ण था. खाने के लिए काफी था.

लेकिन लोरेटो की दीवारों के बाहर का जीवन शांतिपूर्ण नहीं था.

लोरेटो कॉन्वेंट कलकत्ता में था, जिसे "महलों का शहर" कहा जाता था.

कलकत्ता में चौंकाने वाली जगहें भी थीं.

जहां झुग्गी-झोपड़ी कहलाने वाले भीड़-भाड़ वाले, गंदे इलाके थे.

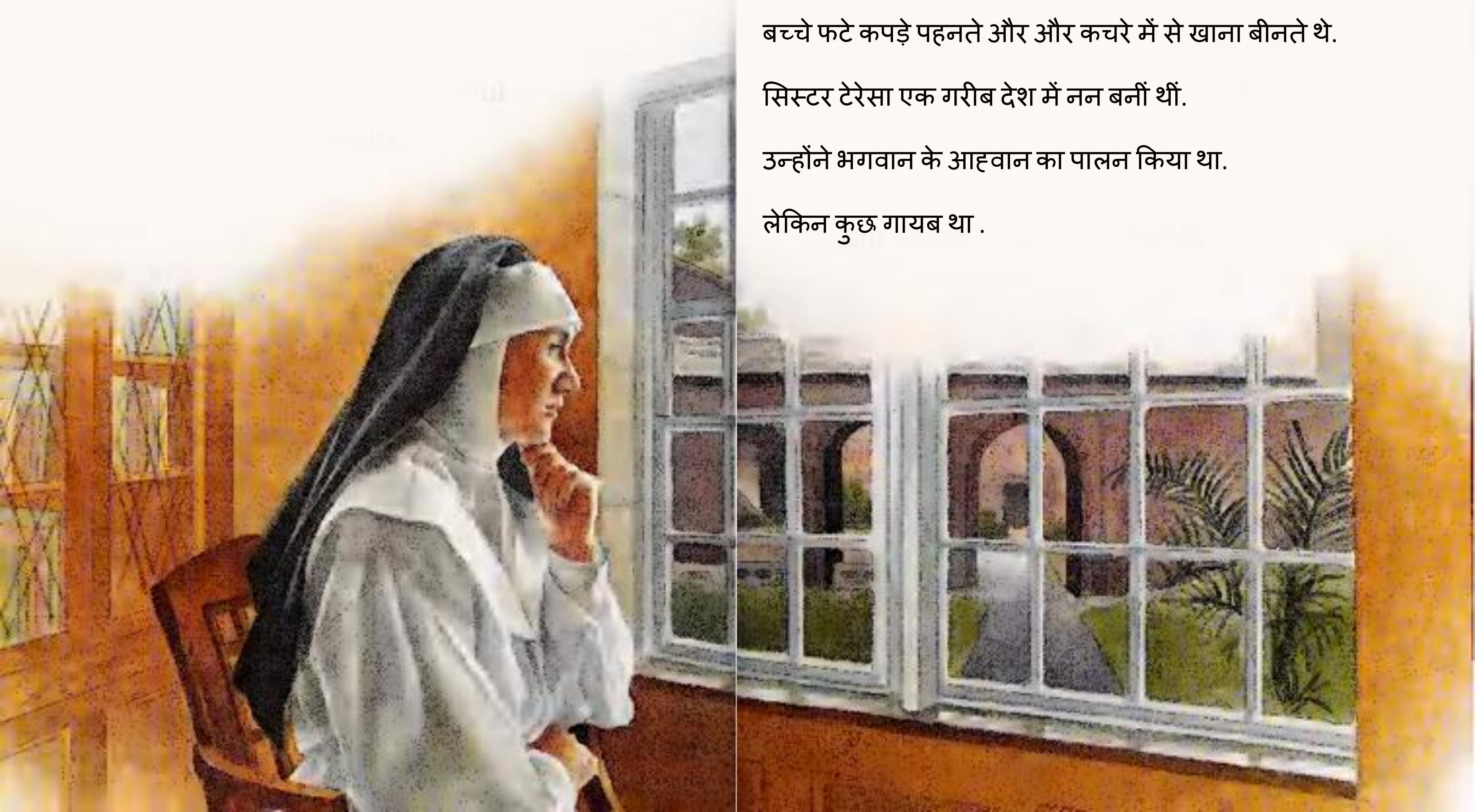
इन गंदी बस्तियों में गरीब लोग रहते थे.

बच्चे फटे कपड़े पहनते और और कचरे में से खाना बीनते थे.

सिस्टर टेरेसा एक गरीब देश में नन बनीं थीं.

उन्होंने भगवान के आह्वान का पालन किया था.

लेकिन कुछ गायब था .



छह साल बाद, सिस्टर टेरेसा ने अपनी अंतिम प्रतिज्ञा ली.

उन्होंने गरीब रहने का वादा किया.

उसने परमेश्वर की आज्ञा मानने का वचन लिया.

उसके तुरंत बाद, वो लोरेटो स्कूल की प्रिंसिपल बन गईं.

उनकी देखभाल में लगभग 300 लड़कियां थीं.

जब भारत में युद्ध छिड़ा, तो सिस्टर टेरेसा चिंतित हुईं.

भोजन की बहुत कमी थी.

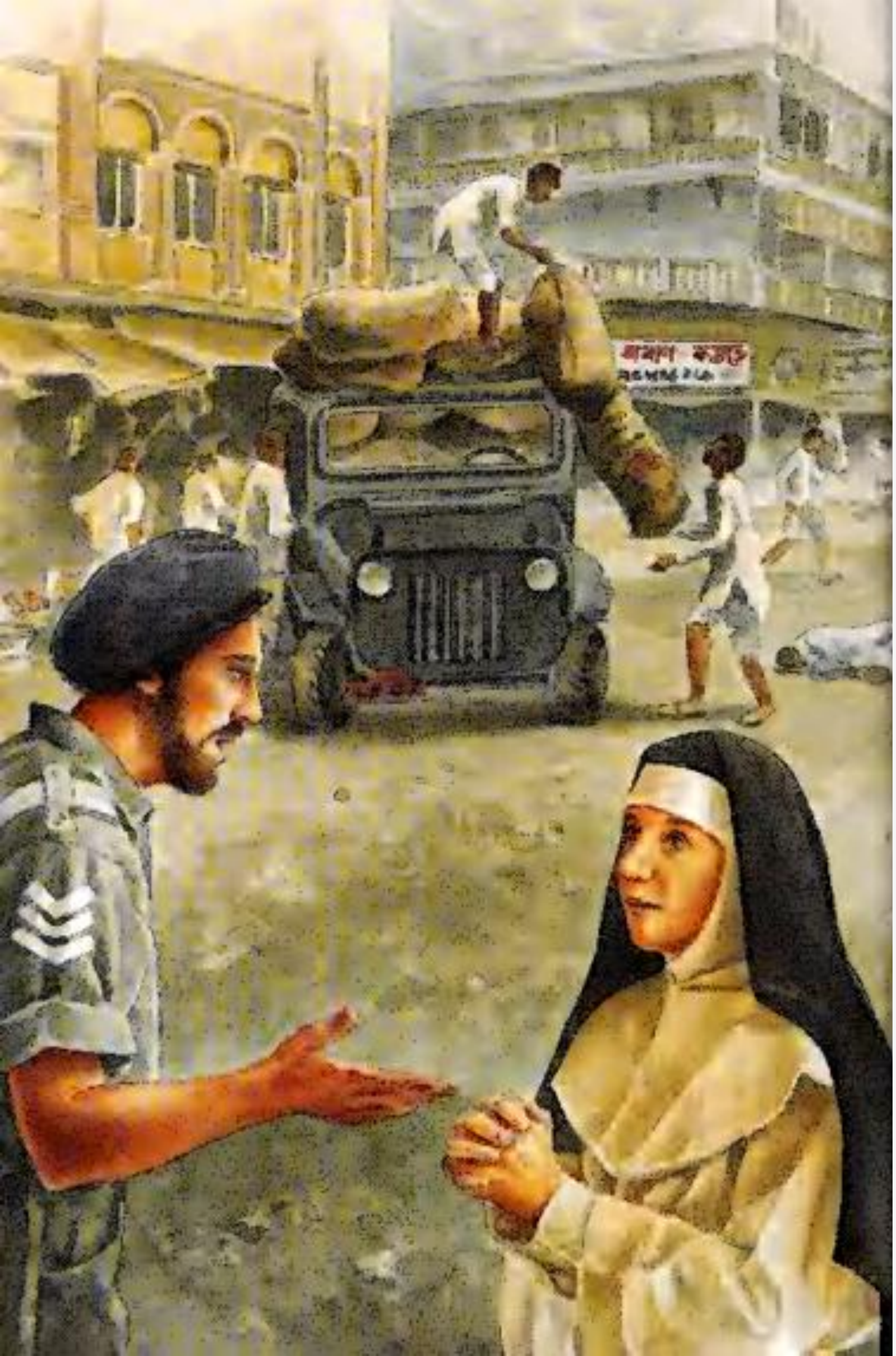
गलियां में गोलियों गूंजने लगीं.

टैंकों ने गड़गड़ाहट की.

दंगों से बचने के लिए लोग कॉन्वेंट की दीवारों पर चढ़ गए.

सिस्टर टेरेसा ने उनकी मदद की.





लोरेटो में आमतौर पर भोजन ट्रक द्वारा आता था.

लेकिन ट्रक भी दंगों से उबर नहीं पाए.

स्कूल में खाना नहीं था.

सालों बाद सिस्टर टेरेसा लोरेटो की चारदीवारी के बाहर गईं.

उन्होंने जिधर भी देखा, उन्हें घायल या मृत लोग दिखाई दिए.

उन्होंने सड़कों पर रहने वाले गरीब लोगों को देखा.

तभी उन्हें चावल की बोरियों वाली एक जीप दिखाई दी.

एक सिपाही ने उन्हें रोकने की कोशिश की.

लेकिन आखिर में सिस्टर टेरेसा को चावल मिल गया.

लोरेटो में सुरक्षित रूप से वापस लौटकर भी वो चारदीवारी के बाहर की स्थिति को भूल नहीं सकीं.

पूर्वी भारत, 10 सितंबर, 1946

एक महीने बाद, सिस्टर टेरेसा एक ट्रेन में बैठीं. वो कलकत्ता की गर्मी और झुग्गियों से दूर पहाड़ों पर जा रही थीं.

ताजी हवा उन्हें कुछ आराम देगी. ट्रेन के पहियों की क्लिक-ए-क्लैक उन्हें सुनाई देती रही.

सिस्टर टेरेसा ने प्रार्थना की. ट्रेन के पहियों की आवाज़ से अलग उन्हें एक और आवाज सुनाई दी. भगवान ने उनसे लोरेटो छोड़ने को कहा. भगवान चाहते थे कि वो झुग्गियों में जाकर सेवा करें. वो चाहते थे कि सिस्टर गरीबों की सेवा करें.



सिस्टर टेरेसा हैरान हुईं.

उन्हें उम्मीद नहीं थी कि भगवान उनसे फिर से कभी बात करेंगे!

लेकिन वो जानती थीं कि उन्हें सीधे गरीबों के साथ काम करने की जरूरत थी.

वो काम उन्होंने पहले कभी नहीं किया था.

कलकत्ता में वापस आकर सिस्टर टेरेसा ने कॉन्वेंट छोड़ने की तैयारी की.

उनके लिए अलविदा कहना मुश्किल था.

सिस्टर टेरेसा ने उस कॉन्वेंट में 20 साल बिताए थे.

उन्हें वहां पढ़ाना पसंद था.

लेकिन उन्हें भगवान की आज्ञा का पालन करना था.





सिस्टर टेरेसा ने केवल कुछ सिक्कों के साथ,

लोरेटो की सुरक्षित दीवारों को छोड़ा.

नन की यूनिफार्म अब उनके लिए बहुत गर्म थी.

इसलिए उन्होंने एक साड़ी खरीदी, जो भारतीय

महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक थी.

वो सूती कपड़े की बनी थी और उसपर तीन नीली

धारियां थीं.

उन्होंने साड़ी को अपने चारों ओर लपेट लिया और

अपने बाएं कंधे पर एक क्रॉस को पिन किया.

सिस्टर टेरेसा को चिकित्सा प्रशिक्षण प्राप्त करने

की ज़रुरत थी.

सड़कों पर तमाम लोग बीमार थे. उन लोगों को

चिकित्सा देखभाल की सख्त ज़रुरत थी.

इसलिए सिस्टर टेरेसा उन नन्स के पास गईं जो

चिकित्सा देखभाल देना जानती थीं.

उन्होंने प्राथमिक उपचार के तरीके सीखे.

उन्होंने ऑपरेशन होते हुए देखे.

उन्होंने प्रसव में गर्भवती माताओं की मदद की.

सिस्टर टेरेसा ने नर्सों से कहा कि वो सबसे गरीब से गरीब

लोगों की देखभाल करना चाहती थीं.

अब से वो गरीबों के साथ ही रहेंगी.

वो गरीबों का ही खाना खाएंगी —सिर्फ चावल.

लेकिन एक नन ने सिस्टर टेरेसा को खुद स्वस्थ रहने की

सलाह दी.

उन्हें ठीक खाना चाहिए, आराम करना चाहिए और साफ

रहना चाहिए.

तभी उनके पास गरीबों की मदद करने की ताकत और

ऊर्जा आएगी.

सिस्टर टेरेसा को उस नन की बात सही लगी.





कलकत्ता, भारत, 1948

लोरेटो स्कूल के पास मोती झील नाम की एक झुग्गी बस्ती थी.

लेकिन झुग्गी बस्ती, अपने नाम की तरह सुंदर नहीं थी.

वहां लोग मिट्टी के फर्श वाली झोपड़ियों में रहते थे.

लोग एक गंदे तालाब का पानी पीते थे और वहीं पर नहाते थे.

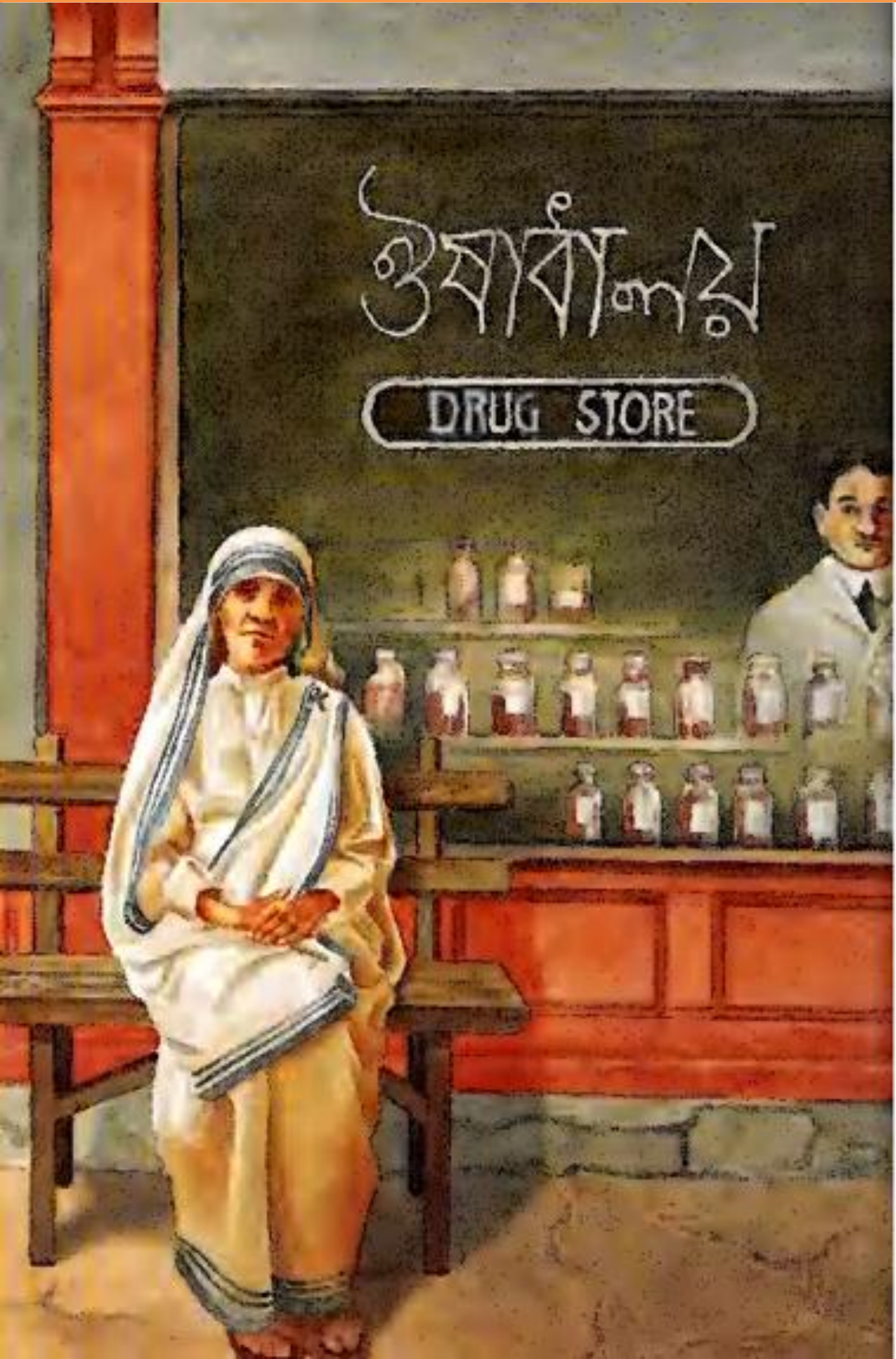
सफेद साड़ी में छोटी नन उस गंदी बस्ती में गईं.

उन्हें सबसे पहले क्या करना चाहिए?

सिस्टर टेरेसा एक शिक्षिका थीं. इसलिए सबसे पहले उन्होंने एक स्कूल शुरू किया. सिस्टर टेरेसा ने एक पेड़ के नीचे बच्चों को इकट्ठा किया. उन्होंने एक लकड़ी की डंडी से मिट्टी में अक्षर लिखे. फिर अगले दिन, किसी ने उन्हें एक कुर्सी लाकर दी. फिर किसी ने एक टेबल दी. जल्द ही कई बच्चे सिस्टर टेरेसा के खुले स्कूल में पढ़ने के लिए आने लगे.







सिस्टर टेरेसा प्रतिदिन झुग्गियों में जाती थीं.

उन्हें विश्वास था कि लोग उनकी मदद ज़रूर करेंगे.

एक दिन, उन्हें गरीबों के लिए दवा की जरूरत पड़ी.

फिर सिस्टर टेरेसा एक दवा की दुकान पर गईं.

ड्रगिस्ट ने मुफ्त में कुछ भी देने से मना किया.

सिस्टर टेरेसा पूरे दिन उसकी दुकान के सामने बैठी रहीं.

दुकान बंद होने पर दवा विक्रेता ने उन्हें उनकी सूची में से सब कुछ दे दिया.

जल्द ही, उनके दो पुराने छात्र उनके साथ जुड़ गए.

उन्होंने अपने स्कूल के लिए एक झोपड़ी किराए पर ली.

सिस्टर टेरेसा ने अपना स्वयं का समूह, ननों का अपना समूह शुरू किया.

इसे मिशनरीज ऑफ चैरिटी कहा गया.

अपने स्वयं के समूह के प्रमुख के रूप में, वो अब मदर टेरेसा बन गईं.

1953 में मदर टेरेसा और उनकी नन्स एक बड़े घर में रहने चली गईं.

उन्होंने इसे "मदर हाउस" कहा.

सभी सिस्टर्स सुबह 4:45 बजे उठती थीं.

फिर वो घर की सफाई करती थीं.

सुबह आठ से साढ़े बारह बजे तक सिस्टर्स गन्दी बस्तियों में काम करती थीं.

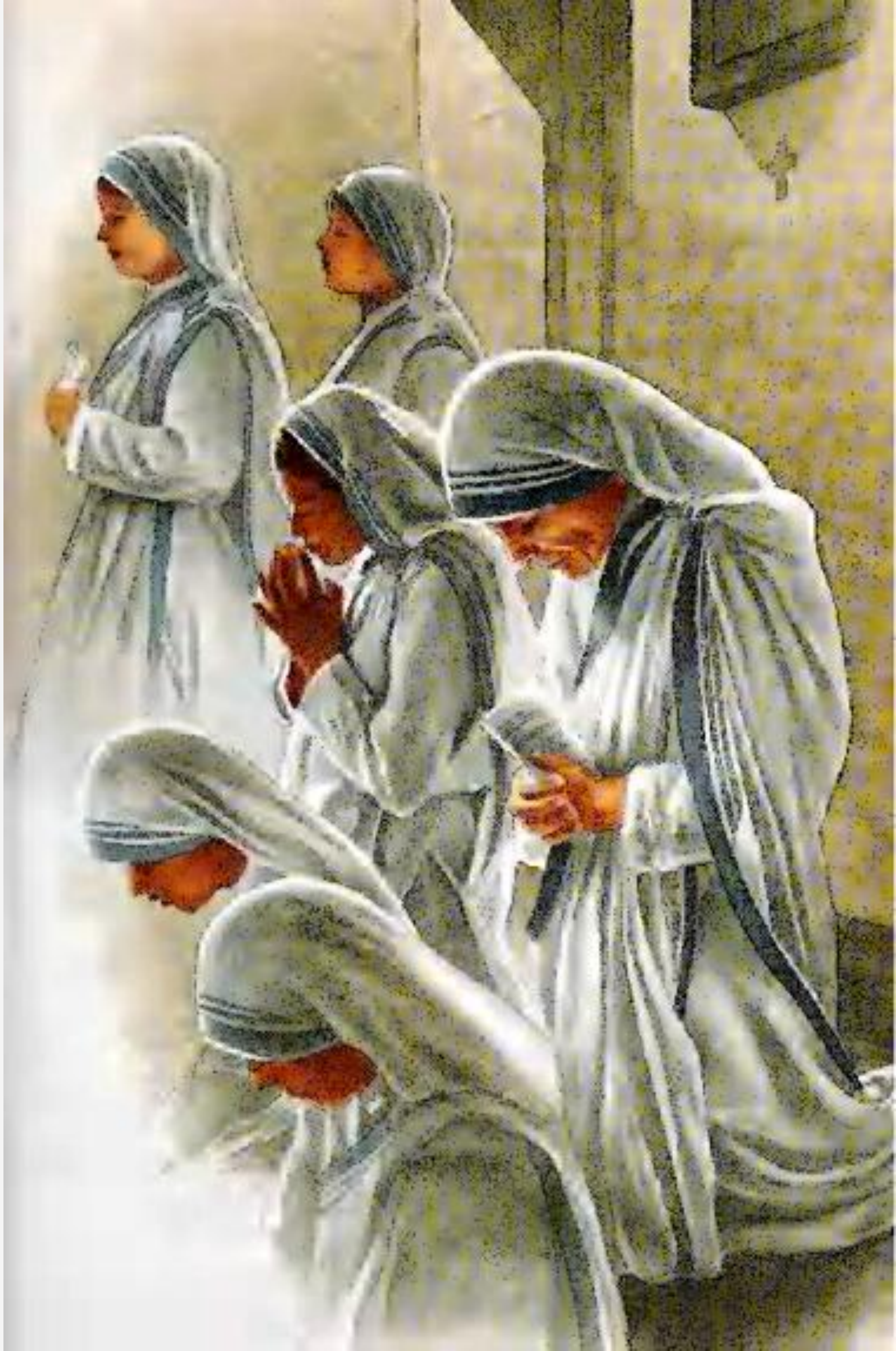
वे दोपहर के भोजन और विश्राम के लिए मदर हाउस वापस आती थीं.

फिर वे वापस जाती थीं और शाम को 7:30 बजे तक काम करती थीं.

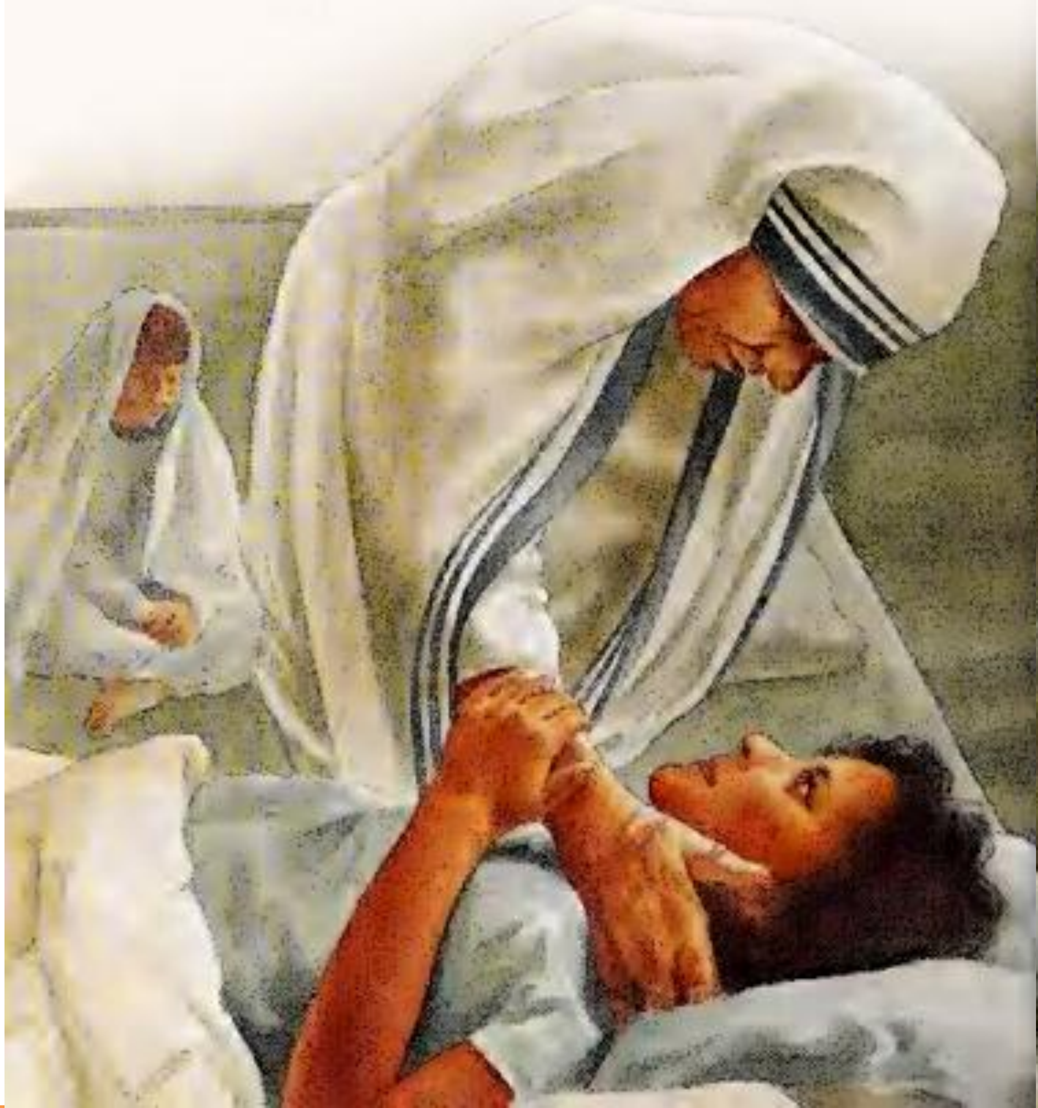
सोने से पहले वो रात का खाना खाती थीं और प्रार्थना करती थीं.

उनका दिन काम से भरा व्यस्त दिन होता था.

मदर टेरेसा ने भी पूरे दिन काम करती थीं, लेकिन वो रात को भी देर तक काम करती थीं.



एक दिन मदर टेरेसा को गटर में मरी हुई हालत में एक महिला मिली. मदर उस महिला को अस्पताल ले गई. लेकिन अस्पताल ने उसे दाखिल नहीं किया. मरने वालों की संख्या बहुत अधिक थी, अस्पताल वालों ने कहा.



झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों के पास स्कूल थे, लेकिन बीमार लोग अभी भी सड़कों पर मर रहे थे. मरने वाले को प्यार और परवरिश क्यों न मिले? इसलिए मदर टेरेसा ने "निर्मल हृदय" नामक एक घर खोला. अब लोग अकेले नहीं मरेंगे, कोई उनकी देखभाल करेगा.



उनका दिन लम्बा होता था, लेकिन मदर टेरेसा के पास हमेशा बीमारों की तीमारदारी का समय होता था. उनके पास एक और प्रार्थना करने का समय होता था. उन्हें बच्चों और बुजुर्गों से प्यार था. उन्हें बीमार लोगों और मरने वालों से प्यार था. वो सबसे गरीब लोगों से प्यार करती थीं. मदर टेरेसा अपनी जैसी अनूठी इंसान थीं. उनके लिए हर व्यक्ति मायने रखता था.



अंत के शब्द

1979 में मदर टेरेसा को नोबेल शांति पुरस्कार मिला. मदर टेरेसा ने अपनी साधारण साड़ी पहनकर गरीबों के हित में वो पुरस्कार स्वीकार किया. उन्होंने अपने सम्मान में आयोजित भोज से इनकार कर दिया. उस पैसे को उन्होंने मिशनरीज ऑफ चैरिटी को भेजने की सिफारिश की.

जैसे-जैसे उनकी प्रसिद्धि बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनके प्रोजेक्ट्स भी बढ़ते गए. उन्होंने दुनिया भर में मिशनरीज ऑफ चैरिटी हाउस खोले.

1997 की एक सितंबर की शाम मदर हाउस में घंटी बजी. हजारों उदास लोग वहां जमा हुए. 87 साल की उम्र में मदर टेरेसा का निधन हो गया था.

उनका काम जारी है. 126 देशों में मिशनरीज ऑफ चैरिटी हाउस में 4,500 से अधिक कार्यकर्ता काम कर रहे हैं. गरीबों और बीमारों के पास हमेशा मदद और देखभाल करने वाले लोग होंगे.



महत्वपूर्ण तिथियाँ

1910 - 26 अगस्त, एग्नेस बोजाक्सीहु का जन्म स्कोप्जे, अल्बानिया में हुआ.

1919 - एग्नेस के पिता का निधन.

1922 - एग्नेस को परमेश्वर का पहला बुलावा मिला.

1928 - एग्नेस ऑर्डर ऑफ द सिस्टर्स ऑफ लोरेटो में शामिल होने के लिए आयरलैंड गईं.

1929 - एग्नेस भारत में कलकत्ता पहुंचीं.

1981 - एग्नेस ने नन के रूप में अपनी पहली प्रतिज्ञा ली और सिस्टर टेरेसा का नाम लिया.

1937 - सिस्टर टेरेसा ने अपनी अंतिम प्रतिज्ञा ली.

1916 - सिस्टर टेरेसा को परमेश्वर की ओर से दूसरा बुलावा मिला.

1948 - सिस्टर टेरेसा ने लोरेटो कॉन्वेंट छोड़ा.

1950 - मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना हुई और सिस्टर टेरेसा बनीं मदर टेरेसा,

1952 - मदर टेरेसा ने "निर्मल हृदय" की स्थापना की.

1979 - मदर टेरेसा को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

1997 - 6 सितंबर, मदर टेरेसा का कलकत्ता के मदर हाउस में निधन.

समाप्त